॥ओ३म्॥
उप सर्प मातरं भूमिम्॥ (ऋ. 10/18/10) मातृभूमि की सेवा करो।

आर्य समाज के संस्थापक
महर्षि दयानन्द सरस्वती

युवा निर्माण

आर्य वीर दल, दिल्ली प्रदेश का मासिक मुखपत्र
(सार्वदेशिक आर्य वीर दल की एक इकाई)
युवकों का होता जहाँ चरित्र निर्माण, आर्य वीर दल है उसका नाम

वर्ष- 2, अंक- 1
माह- फरवरी, मार्च 2018
पृष्ठ- 16

सृष्टि संवत्- 1,96,08,53,119
विक्रमी संवत्- 2075
दयानन्दाब्द- 195

प्रति शुल्क- 15/-
वार्षिक शुल्क-150/-

आर्य वीर दल परिवार की ओर से महाशय धर्मपाल जी के जन्मदिवस पर हार्दिक शुभकानाएँ

महाशय जी का स्वागत (6 फुट लंबी व 22 किलो के गुलाब के फूलों की माला से) करते हुए आर्यवीर दल के कोषाध्यक्ष जितेन्द्र भटिया एवं वीरांगना दल की सह-संचालिका स्नेह भाटिया व शिक्षक गण

27 मार्च, 2018 को एम.डी.एच. फैक्ट्री, कीर्ति नगर, दिल्ली में लाखों लोगों के हृदय सम्राट

महाशय धर्मपाल जी के जन्मदिवस पर स्वागत करते हुए दल के कोषाध्यक्ष श्री जितेन्द्र भाटिया

आप जियें हजारों साल

आर्य वीर दल में सभी आर्यवीरों के प्रेरणा स्रोत व दल पर सदैव अपना वरदहस्त रखने वाले आर्य जगत के भामाशाह महाशय धर्मपाल जी के 95 वे जन्मदिवस के उपलक्ष्य पर आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश आपके सुखद जीवन व दीर्घ आयु की कामना करता है। महाशय जी आपके आशीर्वाद से ही हम अपने सभी कार्यों को गति देने में सक्षम हो पाते हैं और आशा करते हैं कि भविष्य में भी आपका वरदहस्त और आशीर्वाद आर्य वीर दल पर हमेशा बना रहेगा।

नवसंवत्सर (चैत्र शुक्ल प्रतिपदा)

ओ३म् ऋतं च सत्यं चाभीद्धात्तपसोध्यजायत। ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रोऽअर्णवः॥1॥
समुद्रादर्णवादधि संवत्सरोऽअजायत। अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्यमिषतोवशी॥2॥

ऋ0 10.190.1-2 ॥

अनादि पुरुष परमात्मा ने अपने अपार अनुग्रह से स्वकीय अनादि ज्ञान ऋग्वेद की उपर्युक्त श्रुतियों में सृष्टि क्रम का उपदेश देते हुए बतलाया है कि प्रदीप्त आत्मिक तप के तेज से ऋत और सत्य नामक सार्वकालिक और सार्वभौमिक नियमों का प्रथम प्रादुर्भाव हुआ। तत्पश्चात् प्रलय की रात्रि हो गई। फिर मूल-प्रकृति में विकृति होकर उस के अन्तरिक्षस्थ समुद्र के प्रकट होने (उसके क्षुब्ध होने) के पश्चात् विश्व के वशीकर्त्ता विश्वेश्वर ने अहोरात्रों को करते हुए संवत्सर को जन्म दिया। इससे ज्ञात होता है कि आदि सृष्टि में प्रथम सूर्योदय के समय भी संवत्सर और अहोरात्रों की कल्पना पर ब्रह्म के अनन्त ज्ञान में विद्यमान थी। उनके जन्म देने का यहाँ यही अभिप्राय प्रतीत होता है कि वेदोपदेश द्वारा इस संवत्सरारम्भ और उसके मन की कल्पना का ज्ञान सर्वप्रथम मन्त्रदृष्टा ऋषियों को हुआ वा यों कहिये कि प्रत्येक सृष्टिकल्प के आदि में यथानियम होता है और उन्होंने यह जान लिया कि इतने अहोरात्रों के पश्चात् आज के दिन नवसंवत्सर के आरम्भ का नियम है और अहोरात्र की कालगणना संसार में प्रचलित हुई।

अतः यह वैदिक धर्म का सर्वसम्मत सिद्धान्त है कि वेदों के शब्दों से ही संसार में सारी संज्ञाओं (पदार्थों के नामों) का प्रचार होता है। जैसा कि महर्षि मनु ने अपनी मनुस्मृति में लिखा है-

सर्वेषां तु स नामानि कर्माणि च पृथक-पृथक।
वेदशब्देभ्य एवादौ पृथक् संस्थाश्च निर्ममे॥ मनु0 1.11

अर्थात् उस परमात्मा ने सृष्टि के आदि में सबके पृथक-पृथक नाम, क्रम और व्यवस्था वेदों के शब्दों को लेकर ही बनाई। सृष्टि कल्प के आद्य ऋषियों की वाणी वा उनके शब्दों के अनुसार ही वाच्य अर्थ का प्रादुर्भाव होता है, अर्थात् उनके शब्दों को लेकर ही पदार्थों की परम्परा प्रचलित होती है। तद्नुसार **'मधुश्च माधवश्च वासन्तिकावृतू'।** यजु 13.25

वेद की इस श्रुति में आये हुए मधु तथा माधव शब्दों को लेकर वसन्त ऋतु के मासों के नाम पड़े हैं और क्रमानुसार आदिम प्रथम मास का नाम मधु और द्वितीय मास का माधव रखा गया।

कालक्रम से आगे चलकर ज्योतिष विद्या के विकास और विस्तार के समय काल की चन्द्रगणना प्रचलित होने पर मासों के मधु आदि वैदिक नाम बदल कर चैत्र आदि चन्द्र नाम रखे गये। चान्द्र नामों का नामकरण इस नियम से किया गया था कि जिस पूर्णिमा को जो नक्षत्र पड़े वह पूर्णिमा उसी नक्षत्र की नामधारणी होगी और पूर्णिमा के नक्षत्र युक्त नाम के अनुसार ही मास का नाम भी रखा जायेगा। महर्षि पाणिनी के अनुसार जिस पूर्णमासी को चित्रा नक्षत्र हो वह चैत्री कहलायेगी और चैत्री पूर्णमासी जिस मास में पड़ेगी वह चैत्र मास होगा। इसी नियम के अनुसार मासों के चैत्र, वैशाख आदि नाम प्रचलित हुए हैं।

उपर्यक्त विवेचनानुसार सृष्टि का आरम्भ चैत्र के प्रथम दिन अर्थात् प्रतिपदा को हुआ था। आगे चलकर इस पूर्व परम्परानुसार आर्यों के अधिकांश संवत् चैत्र प्रतिपदा से ही आरम्भ किये गये। ब्रह्म दिन, सृष्टि सम्वत्, वैवस्वतादिमन्वन्तरारम्भ, सतयुगादि युगारम्भ, कलि संवत्, वैक्रम संवत्, चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से ही आरम्भ होता है।

आदि सृष्टि से ही आर्य जाति में नवसम्वत्सरारम्भ का पर्व मनाने की प्रथा प्रचलित है। इसलिए इस दिन यज्ञ करके नवसम्वत्सर के बारे में बताने के लिए सभा आदि का आयोजन करना चाहिए।

आर्य निर्माण संकल्प तिरंगा यात्रा

आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश के तत्वावधान में आर्य वीर दल योग केन्द्र शाखा के माध्यम से शुक्रवार दिनांक 26 जनवरी 2018 को विशाल आर्य निर्माण संकल्प तिरंगा यात्रा का आयोजन किया गया। कार्यक्रम प्रात: 7 बजे यज्ञ से शुरु किया गया। यज्ञ पं0 रोहताश आर्य (उप-संचालक आ.वी.द.) के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। जिसके मुख्य यजमान **श्री विनोद आर्य** जी रहे। साथ ही सैकड़ों आर्यवीर नौजवानों ने आर्य निर्माण का संकल्प लेकर यज्ञ में आहुति दी। इसके उपरान्त योग केन्द्र के मुख्य प्रांगण में 51 फुट ऊँचे पोल पर 10 बाई 15 के तिरंगे ध्वज का लोकार्पण मुख्य अतिथि **श्रीमान् मांगेराम सांगवान (भाजपा नेता व समाज सेवी)** द्वारा किया गया। पं0 रोहताश आर्य जी ने गणतन्त्र के 68 वीं वर्षगांठ पर अपना ओजस्वी उद्बोधन दिया। इसके बाद शोभा यात्रा शहर के मुख्य मार्गो के अलावा नजफगढ़ क्षेत्र के मुख्य क्षेत्रों जैसे पपरावट रोड, प्रेम नगर, खैरा गाँव, प्रेम नगर ए0बी0सी0डी0ई0 ब्लॉक, टोडरमल कॉलोनी, गणपति इन्क्लेव, न्यू रोशनपुरा, पुराना रोशनपुरा तथा पपरावट गाँव से होती हुई वापस योग केन्द्र पर सम्पन्न हुई। इस 15 किलोमीटर की यात्रा में 175 आर्यवीरों ने भाग लिया। और जनता को राष्ट्रचेतना का सन्देश दिया। इस बीच मुख्य चौराहों पर आर्यवीरों द्वारा व्यायाम व शक्ति प्रदर्शन भी किया गया। यात्रा के दौरान सभी के जलपान के साथ फूलों की वर्षा द्वारा सभी का स्वागत् किया गया। इस यात्रा को 26 जनवरी को प्रत्येक वर्ष बड़े स्तर पर निकालने का संकल्प लिया गया। कार्यक्रम में मुख्य रूप से श्री विनोद आर्य, अजय आर्य, वरुण आर्य, अमित आर्य, विपिन आर्य, रोहित आर्य, प्रवीन आर्य, इन्द्रजीत आर्य, विवेक आर्य, धर्मवीर आर्य, केशव आर्य, आकाश आर्य, सूरज आर्य, भूपेन्द्र आर्य, का सहयोग प्राप्त हुआ।

दिनेश आर्य, प्र0 शि0

कार्यशाला

आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश के तत्वावधान में कार्यशाला शुक्रवार दिनांक 29 मार्च को प्रात: 11 बजे मिण्टो रोड पर आयोजित की गई। इस कार्यशाला में दिल्ली के व्यायाम शिक्षकों एवं शाखानायकों ने भाग लिया। कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य अपने-अपने क्षेत्रों में दल की शाखाओं का प्रचार- प्रसार व नवयुवकों को जोड़ना रहा और इस विषय पर सभी ने बारीकी से चर्चा की। कार्यशाला में श्री दिनेश आर्य, श्री धर्मवीर आर्य, श्री सूरज आर्य, श्री सुरेश आर्य, रोहित आर्य ने मुख्य रूप से अपने विचार रखे।

- नरेन्द्र आर्य, जहांगीरपुरी

सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में हमेशा उद्धत रहना चाहिए।

मनुष्य के श्रेष्ठ विचार जीने की शक्ति देते हैं।

दैनिक संध्या मनुष्य को निराकार ईश्वर के प्रति आस्थामान बनाती है।

आर्य समाज का स्थापना दिवस

चैत्र शुक्ला पंचमी सम्वत् 1932

(शनिवार, 10 अप्रैल 1975 ई0)

विक्रम की 19 वीं शताब्दी के वृद्ध भारत में वैदिक धर्म, भारतीय सभ्यता और समाज की अभूतपूर्व कल्पनातीत तथा विलक्षण अवस्था हो गई थी। एक ओर शुद्ध सनातन धरम की पवित्र मन्दाकिनी सैकड़ों के असंख्य समय में प्रवाहित रहकर कपोल कल्पित, नाना मतों के नवीन आडम्बरों से कलुषित बन गई थी। वैदिक धर्म के ज्ञान, कर्म और उपासना के तीनों काण्डों का स्थान मिथ्याविश्वासमूलक विविध मतवाद मनुष्यों के विचारों पर अधिकार पा गये थे। मनुष्य वैदिक कर्मकाण्ड के सारभूत पंचमहायज्ञों को त्याग कर मारण, मोहन, उच्चाटन, वशीकरण की सिद्धि में अपना समय बिताने लगे थे। सर्वव्यापक परमात्मा की उपासना से विमुख बनकर कपोल कल्पित देवी-देवताओं की पूजा में तत्पर थे। देवस्थान भंग, चरस आदि मादक द्रव्यों से उन्मत्त, दुराचारी, निरक्षर भट्टाचार्यों (पूजा के शत्रुओं) से भरे रहते थे। जनता जल-स्थल को ही तीर्थ मान बैठी थी। वैदिक वर्णव्यवस्था बिल्कुल लुप्त हो गई थी। उसके स्थान में जन्मजात के गर्वित, गुण-कर्म से रहित पुरुषाधम ब्राह्मणादि वर्ण के अभिमानी बन गये थे। ब्रह्मचारी और सन्यासी नाममात्र के रह गये थे, परन्तु उनका वेश धारण करके लाखों विद्याशून्य, अकर्मण्य, वकवृत्ति और बिडालवृत्ति बने हुए लोग इस वसुन्धरा का भार बढ़ा रहे थे और श्रद्धालु जनता को लूट रहे थे। सच्चे योगियों का स्वरूप तो योगशास्त्र में ही रह गया था परन्तु इसके नाम से पेट भरने वाले जोगियों की एक अलग ही जाति बन गई थी। आचार्य पदवी माल उड़ाने वाले आचार्यों को ही मिल गई थी। सनातन धर्म का कलेवर ही बदल गया था। धर्म केवल रूढ़ियों (रस्मों-रिवाजों) का ही नाम रह गया था। मूर्खता यहाँ तक थी कि लोग वेदों को देहधारी देवता समझने लग गये थे।

दूसरी ओर यूरोप से उठी पाश्चात्य सभ्यता की प्रबल आँधी प्राचीन तथा पूर्वीय सभ्यता का सब कुछ उड़ा ले जाकर उसको तितर-बितर कर देने की धमकी दे रहे थी। 'यथा राजा तथा प्रजा' की कहावत के अनुसार भारतीय प्रजा अपने गौरांग प्रभुओं का रहन-सहन और उठने-बैठने तक की नकल करने में अपना गौरव समझती थी। वह उनकी वेश, भूषा, आहार के अनुकरण से ही सन्तुष्ट न थी, प्रत्युत प्रत्येक विषय में उनकी विचार परम्परा का भी पीछा करती थी। सहस्रों ग्रन्थों से संस्थापित और संसिद्ध सत्य भी पाश्चात्य विद्वानों के प्रमाणों के बिना सिद्धान्त नहीं माने जाते थे। समस्त कलाओं और विद्याओं के आविष्कर्ता भी पाश्चात्य पुरुष ही समझे जाते थे। उनके ही प्रमाणों से धर्माधर्म की परीक्षा की जाती थी। शिखा, सूत्र, आचमन, मार्जन आदि सारे धर्मकृत्य क्यों और कैसे की कसौटी पर कसे जाते थे। सारे धर्म-कर्मों का निदान वा मूल ऐहिक वा सांसारिक सुख ही माना जाता था। उच्चजात्याभिमानी हिन्दू लोगों में कुछ तो धन-कलत्र के लोभ से और कुछ पुराण आदि ग्रन्थों की असम्बद्ध कथाओं एवं हिन्दू धर्म की रूढ़ियों के कारण ईसाई बनते जाते थे और दूसरी ओर अपने ही लोगों के द्वारा किये गये दुर्वव्यवहार और के कारण मुसलमानों के फन्दे में फँसते जाते थे। देववाणी वा आर्यभाषा (हिन्दी) का पठन प्रायः पुरोहितों का ही काम रह गया था। अन्य व्यवसायी वा कारोबारी लोग मौलवियों की पदचर्या और फारसी भाषा की आराधना को ही अपना अहोभाग्य समझते थे। उस समय फारसी से अनभिज्ञ जनों को सभ्यता की परिधि से बाहर समझा जाता था। सर्वगुण आगरी देवनागरी की हिन्दगी कह कर निन्दा की जाती थी। मौलवियों के सम्पर्क में रहने के कारण फारसी पढ़े हुए पुरुष तो खुल्लमखुल्ला मुसलमान हो जाते थे और शेष सारे आचार-विचारों से मुसलमान अवश्य बन जाते थे। उन दिनों वैदिक धर्म का विकृत रूप 'हिन्दूमत' ऐसा कच्चा धागा बन रहा था कि उसको जो चाहता था एक झटके से तोड़ सकता था। वह ईसाई और मुसलमानों के छुए हुए जल मात्र से के पान से ही सदा के लिए विदा हो जाता था और इसलिए गौ और ब्राह्मणों के रक्षकों को प्रतिदिन ह्रास हो रहा था।

इस प्रकार आर्य जाति मृत्यु के मुख में जा रही थी और अपना प्राचीन गौरव खो रही थी। जो आर्य जाति और वैदिक धर्म 800 वर्षों तक के मुसलमानी शासन और तलवार से नष्ट न हो सका था वह अब पाश्चात्यों के सम्मोहन से महानिद्रा में निमग्न होने को उद्यत था। इस धर्मसंकट के समय परमपिता परमात्मा की व्यवस्थानुसार धर्म की रक्षा के लिए दयामूर्ति और आनन्दराशि ऋषि दयानन्द का प्रादुर्भाव भव्य भारत में हुआ।

उनकी जीवनी एक अलग विषय है। पर उन्होंने सन्यासी बनकर और गुरु विरजानन्द से पूर्ण शिक्षा प्राप्त कर भारत के कोने-कोने में परिभ्रमण के पश्चात् इस देश की पतित अवस्था का निरीक्षण किया और द्रवीभूत होकर वैदिक धर्म के पुनरुत्थान और संसार मात्र के परोपकारार्थ आर्यसमाज की स्थापना की।

स्वामी दयानन्द ने गुरु-गवेषणा और अतुल अन्वेषण के पश्चात् जिस सनातन वैदिक धर्म के सिद्धान्तों की स्थापना की थी। उनके लगातार प्रचार के लिए उन्होंने बहुत से श्रद्धालुओं की सहायता तथा राजा पानाचन्द आनन्द की आयोजना के अनुसार भारत की प्रसिद्ध मुम्बापुरी (मुम्बई) गिरगांव में डॉ0 मानिकचन्द्र जी की वाटिका में चैत्र सुदि 5 सम्वत् 1932 विक्रमी, तद्नुसार 10 अप्रैल सन् 1875 ई0 को प्रथम आर्य समाज की स्थापना की। उसके 28 नियम सर्वसम्मति से निर्धारित किये। आगे चलकर लाहौर आर्य समाज की स्थापना के समय इन्हीं 28 नियमों को संक्षिप्त करके सम्प्रति प्रचलित आर्य समाज के 10 नियमों का रूप दे दिया। बम्बई आर्यसमाज के नियमों के अधिक होने का कारण यह था कि उसमें कार्यनिर्वाहक उपनियम भी सम्मिलित थे। लाहौर में उपनियमों को पृथक करके मूल सिद्धान्त रूप में ही दस नियमों को प्रचलित किया गया।

निर्भिक संन्यासी स्वामी दयानन्द

बालक मूलशंकर के पिता कर्शनजी तिवारी शिव के अनुयायी थे। शिव की मूर्ति पर बिल्वपत्र व जल चढ़ाना, घण्टों शिवस्तोत्र का पाठ और शिवपुराण का पाठ करना उनका दैनिक कार्य था। जब मूलशंकर का आठ वर्ष की आयु में उपनयन संस्कार हुआ तभी से पिता ने उसे रुद्राध्याय को कण्ठस्थ करना, शिवलिंग की पिण्डी पर जल चढ़ाना तथा शैव मत के आचार-विचार का पालन करने का उपदेश देना प्रारम्भ कर दिया। जब वे 13 वर्ष के हुए तब पिता ने कहा मूलशंकर कल शिवरात्रि है। तुम्हें शैवमत की दीक्षा लेनी है इसलिए कल उपवास रखो और रात्रि में नगर से बाहर स्थित जड़ेश्वर महादेव के मन्दिर में पूजा-अर्चना करने मेरे साथ चलो। इस दिन जो भक्त उपवास रखकर पूजा-अर्चना करता है उसे शिव साक्षात् दर्शन देते हैं। यद्यपि माता ने बहुत कहा कि बालक भूख-प्यास को सहन नहीं कर सकता, परन्तु पिताजी अपनी बात पर दृढ़ रहे और उन्होंने मूलशंकर को भी अपने विचारों से सहमत कर लिया।

सांय काल को पिता-पुत्र अन्य जनों के साथ शिवालय में पहुँच गये। विधि के अनुसार पूजा-अर्चना की। रात्रि का दूसरा पहर बीत गया। धीरे-धीरे करके मन्दिर के पुजारी, श्रद्धालु भक्तजन व व्रतधारी सोने लगे। यहाँ तक कि उनके पिताजी भी सो गये परन्तु मूलशंकर नहीं सो सका। उसने सुना था कि शिवरात्रि पर व्रत करने वाले को सो जाने पर महापाप लगता है और शिव के दर्शन नहीं होते, इसलिए वह आँखों पर पानी के छींटे देकर जागता ही रहा। चारों ओर नीरवता का साम्राज्य छा गया। इतने में ही एक अनहोनी घटना हो गई। कई चूहे बाहर निकल महादेव की पिण्डी के ऊपर दौड़ने लगे और जो फल-मिष्ठान्न उस पर चढ़ा हुआ था उसे खाने लगे। कुछ ने शिवलिंग पर मल-मूत्र भी करने में संकोच नहीं किया। महापुरुषों और सामान्य लोगों में यही अन्तर होता है कि जिन बातों को हम प्रतिदिन सामान्य घटना समझकर देखते हैं, उन्हीं घटनाओं ने महापुरुषों के जीवन को बदल दिया है। प्रतिदिन लाठी से चलते वृद्धों, चार कन्धों पर जाती अर्थियों आदि को देखकर राजकुमार सिद्धार्थ पत्नी यशोधरा और पुत्र राहुल को छोड़कर घर से निकल जाता है और गौतम बुद्ध बन जाता है। मृगी का शिकार कर उसका पेट चीरने पर दो जिन्दा हिरण के बच्चों का तड़पकर प्राण त्याग देना राजा लक्ष्मण देव को वन्दा वैरागी बना देता है। चाय बनाते समय केतली के ढक्कन को ऊपर उठते देख कर जैम्सवाट भाप की शक्ति को पहचान कर रेल इंजन का आविष्कार कर देता है। सेब को धरती पर गिरते हुए देखकर न्यूटन गुरुत्वाकर्षण की खोज कर देता है।

बालक मूलशंकर के जीवन में भी आज वैसी ही घटना घट रही थी। उसने सोचा क्या ये वही शिव हैं जो पाशुपतास्त्र धारण करके राक्षसों का नाश करते हैं, जो कुपित होकर तीनों लोकों में प्रलय उत्पन्न कर देते हैं। नहीं, कदापि नहीं। यह सच्चा शिव नहीं हो सकता जो अपने ऊपर की गई विष्ठा और सामने रखे हुए नैवेद्य को चूहों द्वारा खाये जाते देखकर भी प्रतिकार नहीं कर पा रहा। इससे उद्वेलित मूलशंकर ने पिता को जगा कर सारी घटना सुना कर पूछा कि क्या यही वो पराक्रमी शिव है जिसकी आप चर्चा करते हैं? कर्षन जी के मस्तक पर मानो वज्रपात सा हुआ। वे बोले निर्बुद्धि बालक! असली शिव तो कैलाश में रहते हैं। यह तो उनकी मूर्ति है। जो श्रद्धापूर्वक यहाँ व्रत-उपवास, पूजा, अर्घ्यप्रदान करता है, उसे देर-सवेर सच्चे शिव के दर्शन भी मिल जाते हैं। तुम्हें इस प्रकार सन्देह व कुतर्क नहीं करने चाहिए। यह कहकर पिताजी करवट लेकर सो गये किन्तु मूलशंकर आज जाग चुका था क्योंकि उसके ज्ञान चक्षु खुल गये थे।

मन में सच्चे शिव का दर्शन करने का संकल्प लेकर प्रबल झंझावातों से जूझते हुए माता-पिता के बार-बार रोकने और प्रयास करने के पश्चात् भी सच्चे शिव की तलाश में 21 वर्ष की आयु में ही घर का त्याग कर शुद्ध चैतन्य बने और फिर सन्यास लेकर स्वामी दयानन्द सरस्वती बनकर वन-पर्वत, हिंसक प्राणी, सर्दी-गर्मी, भूख-प्यास की परवाह न करते हुए सच्चे शिव की प्राप्ति में जवानी को अर्पित कर दिया। मूर्तिपूजा के प्रति अविश्वास आगे जाकर प्रबल झंझावात बन गया और इसने न जाने कितने ही मूर्तिपूजकों की मूर्तियाँ गंगा में फिंकवा दीं। जब उत्तराखण्ड में योगियों का पता लगाते ओखी मठ पहुँचे तब वहाँ के महन्त ने कहा कि मेरे शिष्य बन जाओ यह मठ और सम्पत्ति तुम्हारी होगी। दयानन्द ने उत्तर दिया-मेरे पिता की सम्पत्ति इससे कुछ कम नहीं थी। उदयपुर के महाराणा ने प्रस्ताव रखा कि मेरा राज्य एकलिंग की गद्दी के अन्तर्गत है जिसकी आय लाखों रुपये मासिक है। आप इसे सँभाल लीजिये। आपको पूजा इत्यादि नहीं करनी होगी बस आप मूर्तिपूजा का खण्डन न करें। स्वामी जी आक्रोशित होकर बोले हे राजन्! तुम्हारे राज्य को मैं दौड़ लगाकर पार कर सकता हूँ, परन्तु उस परमेश्वर की आज्ञा न मान कर जन्म-जन्मान्तर में भी पार जाना सम्भव नहीं है। कहते हैं कि एक बार एक सेठ एक लाख रुपये गाड़ी में भरकर स्वामी जी के पास लाया और बोला कि ये रुपये रख लीजिये परन्तु मूर्तिपूजा का खण्डन करना बन्द कर दीजिये। स्वामी जी ने उसकी प्रार्थना को विनम्रता से ठुकरा दिया। सेठजी बोले कि महाराज इतने रुपये देने वाला कोई और नहीं मिलने वाला। स्वामी जी ने तपाक से उत्तर दिया कि इतने धन को ठुकरा देने वाला भी नहीं मिलने वाला। काशी के पण्डितों ने प्रस्ताव भेजा कि हम आपको अपना गुरु घोषित कर देंगे और हाथी पर आपकी सवारी निकाली जायेगी। आप बस मूर्तिपूजा का खण्डन न करें। स्वामी जी ने उनकी प्रार्थना को ठुकरा दिया। स्वामी दयानन्द जी समस्त बुराइयों की जड़ मूर्तिपूजा को ही मानते थे।

अनुकरणीय है राम का चरित्र (रामनवमी पर विशेष)

एक आदर्श पुत्र, आदर्श भाई, आदर्श मित्र, महान तेजस्वी, धीर, वीर, गम्भीर, मर्यादा की रक्षा में सदा संलग्न भारतीय संस्कृति के आधार स्तम्भ मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम का जीवन सम्पूर्ण समाज के लिए प्रेरणा एवं आदर का स्रोत है। राम के चरित्र में वे उदात्त गुण विद्यमान हैं जो उन्हें महामानव और भगवान कहने के लिए प्रेरित करते हैं।

आज्ञापालक-मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम माता-पिता एवं गुरु के आज्ञा पालन में सदैव तत्पर रहे। जब उन्हें पता चलता है कि माता कैकई की इच्छा मुझे वन में भेजने तथा भाई भरत को राजसिंहासन सौंपने की है तो पिता के केवल इशारा मात्र करने पर ही समस्त साम्राज्य को छोड़कर चल देते हैं।

आज्ञा पाकर पूज्य पिता की, छोड़ दिया सिंहासन को,
माँ कैकई होवे प्रसन्न, इसलिए चल दिये थे वन को॥

धीर-गम्भीर- सारे संसार में ऐसा उदाहरण शायद ही देखने को मिले। अभी पता चला कि अयोध्या का राज्य मिलने वाला है लेकिन कोई खुशी नहीं, चेहरे पर बिल्कुल शान्त भाव बना हुआ है। कुछ क्षण बाद पता चलता है कि राज्य आपको नहीं दिया जायेगा, तब भी कोई दुःख नहीं। सागर के समान दोनों ही परिस्थितियों में गम्भीर बने हुए हैं। केवल राज्य ही नहीं गया अपितु अयोध्या को भी छोड़कर जाना पड़ा लेकिन न कोई शिकवा न शिकायत। यह धैर्य की पराकाष्ठा है।

पत्नीव्रता- जब सूर्पनखा ने वन में राम से विवाह हेतु आग्रह किया- मैं आपको पति बनाने आई हूँ-

तुम सम पुरुष न मो सम नारी।
यह संयोग विधि रचा संवारी॥ (रामचरितमानस)

अर्थात् आप मेरे से विवाह कर लीजिये मुझमें सब प्रकार के गुण हैं। मुझे तिरस्कार करने वाला कोई नहीं है। यह सुन राम ने कहा कि मैं विवाहित हूँ और मेरी प्रिय सीता मेरे साथ हैं, मैं दूसरा विवाह नहीं कर सकता। राधेश्याम लिखते हैं-

हम क्वारे नहीं विवाहित हैं, हम एक नारि व्रत रखते हैं,
अपनी को छोड़ पराई को, माता और बहन समझते हैं॥

भ्रातृ प्रेम- राम अपने सभी भाइयों से अत्यधिक प्रेम करते हैं। जब उन्हें राज्य को भरत को मिलने की सूचना मिलती है तब वह बिल्कुल भी दुःखी नहीं होते हैं। इसी प्रकार जब भरत वन में राम को वापस लाने के लिए जाते हैं तब भरत के बार-बार विनय करने पर पिता के यश का स्मरण दिला कर भरत को ही राज्य संचालित करने के लिए आदेश देते हैं। कवि को लिखना पड़ा-

राजतिलक की गेंद बनाकर, खेलन लगे खिलारी,
इधर राम और उधर भरत, दोनों ने ठोकर मारी॥

विद्वानों का सम्मान- जब राम सीता को ढूँढते हुए ऋष्यमूक पर्वत पर पहुँचे तो वहाँ सुग्रीव और हनुमान रहते थे। तब बाली की कोई कुटिल चाल समझकर सुग्रीव ने हनुमान को उनके बारे में पता करने के लिए भेजा। तब हनुमान ब्राह्मण का वेश धारण कर राम-लक्ष्मण के समीप जाकर बोले- ''हे राजर्षि देव समान तेजस्वी महात्मन तपस्वियों के वेश में इस नदी एवं वन की शोभा को बढ़ाते हुए सुवर्ण देह वाले सुन्दर धनुषों को धारण कर धैर्य की मूर्ति सिंह समान पराक्रमी सूर्य चन्द्र के समान तेजस्वी कौन और कहाँ से पधारे हैं?''

इस पर लक्ष्मण ने पूछा कि आप कौन हैं? किस के दूत हैं? हनुमान ने कहा

युवाभ्यां स हि धर्मात्मा सुग्रीवः सख्यमिच्छति।
तस्य मा सचिवं वित्तं वानरं पवनात्मजम्॥

हमारा राजा सुग्रीव है वह आपसे मित्रता चाहता है, वह बड़ा धर्मात्मा विद्वान है। मैं पवन पुत्र उसका मंत्री हूँ। यह सुन राम ने लक्ष्मण से कहा देखो यह सुग्रीव का मन्त्री चतुर व विद्वान है और कैसी कल्याणकारी स्पष्ट वाणी बोलता है इतनी देर बोलने पर भी उसने कोई अशुद्ध व्याकरण नहीं बोली है। अर्थात् बिना ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद व अथर्ववेद के ज्ञान के कोई ऐसा शुद्ध नहीं बोल सकता। निःसन्देह इन्होंने अनेक बार व्याकरण पढ़ा है। राम, लक्ष्मण को समझाते हैं कि भ्रातश्री हनुमान जी वेद व्याकरण के विद्वान हैं, इनसे संयमपूर्वक सहजता से बात करना। राम ने हनुमान को पहली बार में ही समझ लिया था अतः वे हनुमान का अत्यधिक सम्मान करते थे।

शरणागत् की रक्षा- रावण ने विभीषण को लंका से निकाल दिया तो विभीषण सीधे राम के पास गया इस पर सुग्रीव ने कहा कि यह (विभीषण) शत्रु भाव से हमारे पास आया है। राम ने कहा-

मित्र भावेन सम्प्राप्तं न त्यजेयं कथंचन।
दोषो यद्यपि तस्मिन स्यात्सतामेत द्विर्गिहतम्॥

अर्थात् मित्र भाव से आये हुए को मैं कभी नहीं त्याग सकता यद्यपि इसमें नैतिक दोष हों, पर सत्पुरुषों के लिए बड़ी निन्दा का स्थान है कि वे शरण आये मित्र को ग्रहण न करें।

वीरोचित सम्मानकर्ता- ब्रह्मास्त्र से जब रावण की मृत्यु हो गई तो विभीषण अपने भ्राता की याद कर विलाप करने लगे ऐसे में राम ने विभीषण को सान्त्वना दी। ''मित्र! यह रावण शोक के योग्य नहीं है क्योंकि यह असमर्थ अथवा दीन-हीन होकर नहीं मरा, अपितु अति उत्साह व विक्रम के साथ लड़ता हुआ मेरे शस्त्र बल से मरा है।''

''युद्ध में विजय निश्चित नहीं होती। युद्ध में या तो शत्रु के हाथों मरना होता है या शत्रु मारा जाता है। पुराने ऋषियों की यह मर्यादा रही है कि जो क्षत्रिय वीरों की भांति युद्ध में मरे वह शोक योग्य होता है।''

महर्षि वाल्मीकि कृत रामायण का पाठ कर उसे आचरण में उतारने वाले का धर्म, यश आयु एवं सम्मान में वृद्धि होती है। महात्मा श्रीराम का चरित्र आज भी सभी के लिए अनुकरणीय है। राम एक अच्छे पिता, पुत्र, भ्राता, पति, प्रजापालक, राजा, राष्ट्रभक्त, मातृ-पितृ भक्त, ज्ञानवान, धीर, वीर, गम्भीर व्यक्ति थे। उनके गुणों को धारण करने से चारों ओर फैले अनैतिकता, अनाचार, असभ्यता, मद्यपान, प्रमाद, स्वार्थ, रिश्वतखोरी, भौतिकतावाद, सत्तालोलुपता, अशिक्षा, अज्ञानता आदि को समाप्त किया जा सकता है। आइये राम के गुणों को अपने जीवन में धारण कर एक आदर्श समाज और राष्ट्र का निर्माण करें। राम के इन्हीं गुणों के कारण कवि लिखता है-

राम तुम्हारा चरित स्वयं ही काव्य है,
कोई कवि बन जाय, सहज संभाव्य है॥

क्रांति योद्धा, चन्द्रशेखर आजाद

भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव को 23 मार्च 1931 ई को फाँसी पर लटका दिया गया। उनके अन्य साथी भी पकड़ कर जेलों में डाल दिये गये परन्तु आजाद हाथ नहीं आ सके। एक के बाद एक साथियों के जाने के बाद आजाद अकेले रह गये। उन दिनों गाँधी-इरविन समझौता हुआ था। आजाद नेहरू से मिले और कहा कि असहयोग आन्दोलन अब बन्द हो चुका है। इस समझौते में क्रान्तिकारी युवकों की रक्षा के लिए क्या किया गया है। नेहरू ने बताया कि इस समय सब कुछ गाँधी जी के हाथ में है और वे क्रान्तिकारियों के लिए कुछ नहीं कर सकते। भगत सिंह की फाँसी की सजा को स्थगित करने के लिए जब कहा गया तो उन्होंने कहा कि मैं हिंसा में विश्वास नहीं करता। भगत सिंह को फाँसी कल होने वाली है तो आज ही हो जानी चाहिए जिससे कांग्रेस के अधिवेशन में लोगों को पता लग जाये कि कांग्रेस की इन क्रान्तिकारी युवकों से कोई सहानुभूति नहीं है।

प्रयाग के एक सेठ के पास क्रान्तिकारियों की धनराशि जमा थी। आज़ाद ने वहाँ पहुँचकर रुपया माँगा। सेठ की नीयत बदल चुकी थी। उसने एक-दो दिन के बाद देने का वायदा किया और पुलिस को सूचना दे दी। 27 फरवरी 1931 ई को इलाहाबाद के अल्फ्रेड पार्क में आजाद के होने की सूचना पाकर पुलिस ने उनको चारों ओर से घेर लिया। एक अंग्रजी पुलिस अफसर नाटबाबर आगे बढ़ा और बोला हैण्ड्सअप। आजाद ने उसको निशाना बनाया। घायल होकर नाटबाबर एक ओर गिर पड़ा। एक भारतीय पुलिस अफसर भी घायल हुआ। दोनों ओर से 20 मिनट तक गोलियाँ चलती रहीं। जब आजाद के रिवाल्वर में एक ही गोली शेष रह गई तब उन्होंने कनपटी पर पिस्तौल लगाकर घोड़ा दबा दिया और भारत माता का यह सपूत स्वयं को मातृभूमि के चरणों में अर्पित करके एक ओर लुढ़क गया।

आजाद को गिरते देख कर भी पुलिस दल का साहस नहीं हुआ कि आगे बढ़े। आज़ाद के मृतक शरीर के पाँव में गोली मारकर देखी गई। जब निश्चय हो गया तभी पुलिस अफसर आगे बढ़े। आजाद की मृत्यु का समाचार सारे नगर में फैल गया। जिसने भी सुना वह अल्फ्रेड पार्क की ओर चल दिया। जिस पेड़ की आड़ में आजाद पुलिस से लड़ रहे थे वह तीर्थस्थल बन गया। देवियाँ वहाँ पूजा करने लगीं। सरकार को यह भी सहन नहीं हुआ। उसने उस पेड़ को ही कटवा दिया, परन्तु जनता के हृदय में आज़ाद के प्रति जो सम्मान था उसे सरकार नहीं निकाल सकी। आजाद जी एक बात हमेशा कहा करते थे-

दुश्मन की गोलियों का हम सामना करेंगे,
आजाद ही रहे हैं आजाद की मरेंगे॥

उनकी यह बात सही साबित हुई। आजाद के हाथों में जब तक माउजर रहा तब तक कोई उनको देख भी नहीं सका और आत्मा दासता की बेड़ियाँ तोड़ आजाद हो गई।

वन्दे मातरम्

वन्दे मातरम् गाना होगा, या भारत से जाना होगा।
भारत को जो माता समझे, उसका यहाँ ठिकाना होगा।
भारत की है पावन भूमि, भारतवासी राज करें,
पेट में जिनके दर्द उठेगा, उनका सही इलाज करें।
कड़वी दवा को खाना होगा, वन्दे मातरम् गाना होगा।।1।।
भारत का अन्न खाते हैं, गैर देश के गुण गाते,
हिन्दी-संस्कृत से डरते हैं, उर्दू अरबी अपनाते,
राज है क्या बतलाना होगा, वन्दे मातरम् गाना होगा।।2।।
हमें अपने देश की मिट्टी, प्राणों से भी प्यारी है,
भारत माँ का सिर ऊँचा हो, तब ऊँची शान हमारी है।
इसका मान बढ़ाना होगा, वन्दे मातरम् गाना होगा।।3।।
भारत माता सबकी माता, इसके हित जीना मरना,
प्यारे वतन की रक्षा हित, प्राण न्यौछावर है करना,
सबको 'पथिक' समझाना होगा, वन्दे मातरम् गाना होगा।।4।।

-पं रोहताश आर्य

शोभायात्रा

वेद प्रचार मण्डल मध्य दिल्ली के तत्वावधान में स्वामी दयानन्द सरस्वती के 194 वें जन्मोत्सव पर रविवार दिनांक 18 फरवरी को आर्य समाज रानी बाग की ओर से विशाल शोभायात्रा का आयोजन किया गया। इस शोभायात्रा में आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश की मुख्य शाखाओं (रानी बाग, कीर्ति नगर, मंगोलपुरी, विकासपुरी, मोतीनगर, जनकपुरी सी3, राड़धना) ने भाग लिया। शोभायात्रा में शोभा बढ़ाने हेतु सभी आर्यवीर गणवेश में संचलन के साथ शक्ति प्रदर्शन व योग प्रदर्शन करते हुए आगे बढ़ रहे थे। इसमें सैकड़ों आर्य वीरांगनाओं ने भी अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। इन सभी का शौर्य प्रदर्शन दल की मंत्राणी श्रीमती अमृता आर्या जी के नेतृत्व में सम्पन्न हुआ। इसकी अगुवाई दिल्ली प्रदेश के प्रधान व्यायाम शिक्षक श्री दिनेश आर्य व उप प्रधान व्यायाम शिक्षक श्री धर्मवीर आर्य ने की। शोभायात्रा यज्ञ के बाद रानी बाग, संदेश विहार, सरस्वती विहार के विभिन्न मार्गों से होती हुई सम्पन्न हुई। आर्यवीरों के स्वागत् के लिए जगह-जगह जलपान, व खाने-पीने की व्यवस्था की गई। इस प्रकार से समाज हित के कार्यों में आर्य वीर दल व आर्य वीरांगना दल निस्वार्थ भाव से सहयोग कर कार्यक्रमों को सफल बनाते हैं।

-धर्मवीर आर्य, उप प्रधान शिक्षक

।। भगवान् आर्यों को पहली लगन लगा दे वैदिक धर्म की खातिर मिटना इन्हें सिखा दे ।।

जीवन में ब्रह्मचर्य का महत्व

प्रारम्भिक शब्द (स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा लिखित)

आजकल की सभ्य कहाने वाली पाश्चात्य जातियों के पूर्वज जिस समय अन्धकार में हाथ से रास्ता टटोल रहे थे और अपने अंग को वस्त्र से ढौंपना तक न जानते थे उस समय आर्यावर्त में 'ब्रह्मचर्य' विषयक ज्ञान अपनी चरम सीमा तक पहुँच चुका था। मानवीय विकास के लिए ब्रह्मचर्य आवश्यक समझा जाता था, विचार तथा क्रिया में विवाह को एक धार्मिक संस्कार समझा जाता था और सन्तानोत्पत्ति गृहस्थ के तीन ऋणों में से एक ऋण समझा गया। बृहदारण्यकोपनिषद में गर्भाधान विधि को अत्यन्त पवित्र यज्ञ कहा गया है, इस अनुष्ठान के लिए अनेक नियमों की श्रृंखला बाँध दी गई है। मैक्समूलर जैसे उच्च कोटि के विद्वान ने उक्त स्थल का आंग्लभाषा में अनुवाद नहीं किया क्योंकि उसका विचार था कि वर्तमान सभ्य कहाने वाले गन्दे संसार के लिए वे विचार इतने उच्च हैं कि उनका महत्व उसकी समझ में नहीं आ सकता था।

ब्रह्मचर्य के महत्व को समझने के लिए युरुप तथा अमेरिका को पर्याप्त समय लगा है। थोड़े समय से वहाँ के विज्ञान तथा चिकित्सा से परिचय रखने वाले विद्वानों ने अनुभव करना प्रारम्भ किया है कि ब्रह्मचर्य की नींव पर ही व्यक्ति तथा जाति के जीवन की भित्ति का निर्माण किया जा सकता है। पश्चिम में हरेक को विचारों की आजादी है। उसी का परिणाम है कि इस थोड़े समय से अरसे में इस विषय में उन्होंने अपने वैज्ञानिक अनुभवों तथा अन्वेषणों के आधार पर एक नवीन विद्या की भी आधारशिला रख दी है, जिसका नाम 'युजेनिक्स' (सन्तति शास्त्र) है। ब्रह्मचर्य एक व्यापक शब्द है जिसमें 'युजेनिक्स' भी शामिल है। वेदों के आदेश के अनुसार यह मानवीय जीवन का प्रथम सोपान है, और यही उन्नति के मार्ग पर मनुष्य समाज का पथ-प्रदर्शक है। इस युग में सब से प्रथम ऋषि दयानन्द ने अंगुलि उठाकर वर्तमान सभ्यता की जड़ में लगे हुए घुन की तरफ निर्देश करते हुए बतलाया था कि शारीरिक, मानसिक एवं आत्मिक ब्रह्मचर्य द्वारा ही मनुष्य समाज की रक्षा हो सकती है। आज पाश्चात्य विद्वान ऋषि दयानन्द के ब्रह्मचर्य विषयक एक-एक शब्द की दाद दे रहे हैं।

मेरे शिष्य प्रो0 सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार ने विद्यार्थी समाज के लिए 'ब्रह्मचर्य सन्देश' को लिख मातृभूमि की महान सेवा की है। गुरुकुल विश्वविद्यालय, कांगड़ी के आचार्य की हैसियत से मुझे 14 वर्षों तक सैकड़ों बालकों के जीवन के निरीक्षण तथा संचालन का उत्तरदायित्वपूर्ण अधिकार प्राप्त रहा है। मेरा अनुभव है कि प्रत्येक युवक की 13 से 18 वर्ष की अवस्था अत्यन्त नाजुक होती है, परन्तु यदि आचार्य कुशलतापूर्वक इस समय के खतरों से उसे निकाल ले जाये जो बालक का जीवन बिगड़ने के स्थान पर शारीरिक तथा मानसिक शक्ति का खजाना बन जाय। **'ब्रह्मचर्य सन्देश' जैसी पुस्तकों के प्रचार से बालकों का अत्यन्त उपकार हो सकता है परन्तु वास्तविक कार्य तभी होगा जब आचार्य की देख-रेख में रहते हुए ब्रह्मचारियों का जीवन गढ़ा जायेगा।**

ब्रह्मचर्य के सन्देश को सुनने और सुनाने के लिए दैवीय प्रेम तथा पवित्रता का वातावरण होना चाहिये। मैंने स्वयं इस विषय में विद्यार्थियों को अनेक उपदेश दिये हैं। जब तक मन को शुद्ध कर इन उपदेशों को न सुना जाय तब तक इनसे लाभ के स्थान पर हानि होने की संभावना रहती है। इसलिए इस पुस्तक को पढ़ने वालों के प्रति मेरी सलाह है कि इस के पन्ने पलटने से पहले नम्रता के भाव भर लें। विश्व विधायक देवमाता को अपने हृदय में प्रतिस्थापित करके, और यदि यह सम्भव न हो तो अपनी प्रेममयी जननी जिसकी गोद में खेलते-खेलते कई वर्ष बिता दिये उसका ध्यान करके पवित्र, तथा दैवीय वातावरण में इस पुस्तक को हाथ लगायें।

गुरुकुल छोड़ने के बाद, सन्यास आश्रम में प्रविष्ट होते समय, मेरा विचार था कि ब्रह्मचर्य विषयक अपने अनुभवों को देश के विद्यार्थी-समाज तक पहुँचाऊँ। परन्तु 'मेरे मन कछु और है विधना के कछु और'-मैं अपने वास्तविक मार्ग से हटकर सामयिक घटनाओं की उलझन में पड़ गया। इस समय भारत के विद्यार्थी समाज की सबसे बड़ी जरुरत यही है कि रहनुमा बनकर उसके वैयक्तिक जीवन को ठीक मार्ग पर चलाया जाय। मैं भारत के स्कूलों तथा कॉलजों के अध्यापकों एवं आचार्यों से कहना चाहता हूँ कि वे अपने धर्म को पहचानें-स्वयं ब्रह्मचारी बनें ताकि अपने छात्रों को ब्रह्मचारी बना सकें। वेद भगवान का कथन है-**'आचार्योब्रह्मचर्य्येणब्रह्मचारिणमिच्छते'-ब्रह्मचर्य धारण करके ही आचार्य छात्र को ब्रह्मचारी बना सकता है।** मेरी यही हार्दिक प्रार्थना है कि 'त्वमेव माता च पिता त्वमेव' स्वरूप वाले भगवान मातृभूमि के आचार्यों तथा शिष्यों को ज्योति स्तम्भ होकर कर्तव्य मार्ग प्रदर्शित करें। क्रमशः........

गोदुग्धामृत

गाय, भैंस, भेड़, बकरी आदि अनेक पशुओं का दूध प्रयोग में लाया जाता है, किन्तु गोदुग्ध ही सर्वश्रेष्ठ और अमृत है। महाभाष्य के अनुशासन पर्व में लिखा है-

''**अमृतं वै गवा क्षीरम्**'' अर्थात् गोदुग्ध ही वास्तव में अमृत है।

हमारे शरीर के लिए दूध की अत्यधिक आवश्यकता है, यदि बच्चे को दूध यथोचित मात्रा में नहीं मिलता है तो उसके शरीर का पूर्ण विकास नहीं हो पाता है। वैसे तो दूध सभी अवस्थाओं में श्रेष्ठ और पथ्य है किन्तु वृद्धि अवस्था में 16 से 40 वर्ष तक नवयुवकों के लिए अत्यावश्यक है। ''क्षीरमोजस्करं पुंसाम्'' तथा ''पयसा वर्धते तनुः'' के अनुसार दूध से बल, वीर्य, ओज, कान्ति और शरीर की वृद्धि होती है। अतः प्रतिदिन के भोजन में दूध का अपना विशेष स्थान है। दूध सर्वश्रेष्ठ और पूर्ण भोजन है। डाक्टरों के मतानुसार इसमें विटामिन ए, बी. डी. जी होते हैं। दूध में सभी पोषक एवं जीवनीय तत्व विद्यमान हैं। अतः केवल दुग्धाहार से ही शरीर का पूर्ण विकास हो सकता है। संसार में इसके तुल्य अन्य कोई पदार्थ नहीं जिस पर जीवन निर्वाह या शरीर का विकास किया जा सके। गोमाता की यह अनुपम देन है।

चरक सूत्र के अनुसार गो दुग्ध के दस गुण-गाय का दूध 1. स्वादु (मीठा), 2. शीत (ठण्डा), 3. कोमल, 4. स्नेहयुक्त और घृत वाला, 5. गाढ़ा, 6. चिकना, 7. चिपचिपा, 8. कुछ भारी, 9. देर से बिगड़ने वाला, 10. निर्मल होता है। इससे पता लगता है कि गोदूध सब गुणों का भण्डार है।

महर्षि धन्वन्तरि के अनुसार-दूध अनेक औषधियों का रस है, सब द्रव्यों में निर्मल, प्राण अर्थात् जीवन वाला, भारी, मधुर, चिपचिपा, शीतल, स्निग्ध, चिकना, रेचक और कोमल आदि दस गुणों वाला है। सब प्राणियों के लिए सुखदायी है, अर्थात् अमृत है।

दूध एक पूर्ण भोजन संसार में किसी भी भोजन की तुलना दूध से नहीं की जा सकती। दूध प्रकृति की पाठशाला में तैयार हुआ एक अद्वितीय भोजन है। दूध में मानव शरीर को धारण और पोषण करने के योग्य सभी उपादान विद्यमान हैं। केवल दूध पर ही सारा जीवन व्यतीत किया जा सकता है और किसी अन्य भोजन की शरीर को आवश्यकता ही नहीं रह सकती। इसलिए दूध को पूर्ण भोजन का नाम दिया गया है।

दूध स्वास्थ्य रक्षा का सर्वोत्तम साधन है। इसके सेवन से न केवल शरीर का बल ऊँचाई और वनज बढ़ता है अपितु पुराने रोगों के इलाज में इसका प्रयोग प्राचीन काल से होता चला आया है।

भारतवासी अधिकांश शाकाहारी हैं। दूध के बिना इनके भोजन में प्रोटीन को अभाव रहता है अतएव भारतवासियों के लिए दुध सेवन की आवश्यकता विशेष रूप से है लेकिन कितने दुख की बात है कि इसी देश में इस समय दूध का भारी अकाल है।

देखा तो नहीं, परन्तु सुनते हैं कि किसी समय भारत में दूध की नदियाँ बहती थीं। गो का जो मान-सम्मान यहाँ था, उससे दूध की प्रचुरता का अनुमान लगाना कठिन नहीं, लेकिन आज तो दूध भी सपना है और गौ की पूजा भी लकीर पीटना रह गया है। प्राचीन समय में वर-वधू को लड़की के माता-पिता गोदान करते थे, इसके पीछे यही भावना रहती थी कि बेटी तथा दामाद दूध पीकर स्वस्थ-बलिष्ट बनें ताकि उनकी सन्तति भी बलवान उत्पन्न हो। परन्तु आज यह सुन्दर पद्धति रुपये-पैसे के मोल बिक कर राक्षसी प्रथा के रूप में रह गई है।

दूध की इतनी महत्ता हमारे देश में इसीलिए थी कि हमारे पूर्वज दूध के स्वास्थ्यवर्द्धक उत्तम गुणों से पूर्णतः परिचित थे। दूध एक प्रकार से मनुष्य का पूरा भोजन है। उसमें वे सभी पदार्थ पाये जाते हैं, जिनकी स्वास्थ्य के लिए आवश्यकता होती है। दूध में अच्छे प्रकार का प्रत्यामिन (प्रोटीन), वसा (फैट), शर्करा, खनिज लवण और विटामिन आदि मिलते हैं। आधा शेर दूध से शरीर को उतनी ही शक्ति मिलती है जितनी 9 अण्डों या 6.5 पौंड सन्तरों के रस अथवा 2 पौंड आलुओं के खाने से प्राप्त होती है।

दूध को लोग कई तरह से काम में लाते हैं। कुछ लोग इसे ठण्डा पीते हैं, कुछ लोग गरम करके सोते समय और कुछ लोग इसमें कोको या ओवल्टीन मिला कर पीते हैं। अगर गाय स्वस्थ हो, उसे हरा चारा, खली और साफ पानी खाने-पीने के लिए समय पर मिलता हो, तथा दूध दुहने वाले का हाथ और बर्तन स्वच्छ हो तो प्रातः धारोष्ण दूध पीना ही सुन्दर है। धारोष्ण दूध से अभिप्राय है, स्तनों से तत्काल निकला हुआ हल्का-हल्का गरम दूध। वागभट्ट ने धारोष्ण दूध के विषय में लिखा है-'धारोष्णममृतोपमम्' अर्थात् धारोष्ण दूध अमृत के तुल्य है। भावप्रकाश में धारोष्ण दूध के विषय में आया है कि गाय का धारोष्ण दूध बलवर्धक, हल्का, शीतल, अमृत के समान, भूख बढ़ाने वाला, तथा तीनों दोषों, वायु, पित्त और कफ का नाश करने वाला है।

धारोष्ण दूध का अर्थ कच्चा दूध कदापि नहीं है। दुहकर रखा हुआ ठण्डा दूध तो उबालकर ही लेना चाहिए। इसके अतिरिक्त जहाँ स्वच्छता में सन्देह हो, वहाँ दूध को उफान देकर पीना चाहिए। दूध मे शक्कर मिलाये बिना ही उसे पीना चाहिए, क्योंकि उसमें स्वतः शर्करा होती है जो सुपाच्य होती है। शक्कर मिलाने से दूध वायुकारक बन जाता है।

स्वास्थ्य रक्षा तथा सर्वद्धन हेतु दूध कितना उपयोगी है, इसका पता इसी बात से लग सकता है कि रोगों की चिकित्सा में दूध का प्रयोग प्राचीन काल से होता चला आ रहा है। हमारे देश में दुग्ध कल्प अर्थात् दुग्ध चिकित्सा कोई बड़ी बात नहीं है। आयुर्वेद में इसकी बड़ी महिमा है। किन्तु आयुर्वेदिक दुग्ध कल्प तथा प्राकृतिक दुग्ध कल्प में एक स्पष्ट अन्तर इस बात का अवश्य है कि आयुर्वेद में कल्प के दौरान औषधियों का प्रयोग किया जाता है और प्राकृतिक दुग्ध कल्प में किसी प्रकार की औषधि की गुंजाइश नहीं है। यह एक बड़ा अन्तर है।

यह उल्लेखनीय है कि दुग्धाहार तथा दुग्ध कल्प में बड़ा अंतर है। कल्प में हम सुनयोजित ढंग से दूध को सेवन करते हैं जबकि दुग्धाहार में जैसे भी हो दूध का अधिक से अधिक प्रयोग किया जाता है। नियोजन का बड़ा महत्व है। इसी कारण जीर्ण रोगों से मुक्ति पाने के लिए जहाँ अन्य उपचार विधियाँ असफल हो जाती हैं वहाँ दुग्ध कल्प से लाभ मिलते देखा गया है।

गौ गौरव- आचार्य ब्र0 नन्दकिशोर

आर्य वीर दल का इतिहास

सन् 1946 ई में पश्चिमी पंजाब में हजारा, रावलपिण्डी तथा जेहलम जिलों में, जहाँ पर मुस्लिम भारी संख्या में थे, हिन्दुओं पर भयानक अत्याचार हुए। सैकड़ों स्त्रियों ने अपने सतीत्व की रक्षा के लिए कुओं में छलांग लगाई। सैकड़ों युवक वीरतापूर्वक लड़ते हुए शहीद हुए। उस समय रावलपिण्डी, नौशेरा तथा अन्य स्थानों के आर्यवीरों ने अपनी जान पर खेलकर हिन्दुओं की सेवा और रक्षा की।

भारत की स्वाधीनता से पूर्व ही सीमाप्रान्त की हिन्दू जनता को जीवन-मरण के संघर्ष से गुजरना पड़ा। पूर्वी बंगाल के नोआखली जिले में सोहरावर्दी के संकेत से मुस्लिम गुण्डे बंगाल के हिन्दुओं का निर्मम संहार कर रहे थे। सार्वदेशिक सभा द्वारा आदेश मिला कि 200 मौत से खेलने वाले आर्यवीरों का दल पूर्वी बंगाल भेजा जाये। अलवर के दल को सैनिक भेजने का आदेश हुआ। सभा प्रधान के सामने एक सहस्र आर्यवीर खड़े कर दिये गये कि इनमें से किन्हीं 200 का चयन कर लें। प्रत्येक आर्यवीर जाने के लिए आग्रह कर रहा था। श्री ओमप्रकाश त्यागी जी के नेतृत्व में आर्यवीर नोआखली के लिए रवाना हुए। वहाँ जाकर रेलवे स्टेशन से उतरते ही प्रभावित क्षेत्र में अपना शिविर लगाने से पूर्व बम विस्फोट किया। गुण्डों को यह समझते देर नहीं लगी कि यह घटना कुछ और ही संकेत कर रही है। उनकी हिम्मत उधर देखने की भी नहीं हुई।

पास में ही श्रीमती सुचेता कृपलानी के नेतृत्व में कांग्रेस का शिविर लगा हुआ था। इसके कार्यकर्ता अहिंसा का मिथ्याराग अलापते और आर्यवीर दल को गालियां देते न थकते थे। एक दिन मुस्लिम गुण्डों ने कांग्रेस शिविर पर धावा बोल दिया और सुचेताजी के बालों को पकड़कर घसीटते हुए अपने क्षेत्र की ओर ले जाने लगे। सूचना पाकर आर्यवीर दल के सेनापति श्री ओमप्रकाश त्यागी सशस्त्र आर्यवीरों के साथ गुण्डों पर टूट पड़े और उनका सारा नशा झाड़ दिया। सुचेताजी खुले बाल, धूलिलिप्त, भूमि पर पड़ी थीं। श्री ओमप्रकाश जी को सामने देखकर आँखों में पानी भरकर बोलीं, ''भैया! तुम आ गये।'' प्रत्युत्तर में इन्होंने कहा कि गुण्डों द्वारा अपनी बहन का अपमान देखकर महर्षि दयानन्द के सैनिक कैसे चुप रह सकते हैं? ऐसे ही अनेक अवसरों पर अपनी जान हथेली पर रखकर आर्यवीरों ने न जाने कितनी माताओं-बहनों की जान और आबरु बचाई है।

सार्वदेशिक आर्यवीर का राष्ट्रीय शिविर

4 जून से 17 जून, 2018, (स्थान- गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ, फरीदाबाद)

प्रवेश शुल्क 500रु.
पाठ्यपुस्तकें शिविर की ओर से दी जायेंगी।

आवश्यक सामानः-

गण्वेश खाकी हाफपैण्ट, सफेद शर्ट, सैण्डो बनियान, सफेद जूते, सफेद मोजे, लंगोट, लाठी, नोटबुक, हल्का बिस्तर, थाली, लोटा एवं दैनिक उपयोग में आने वाली वस्तुयें।

नोटः-

1. शिविर में प्रवेश आर्यवीर श्रेणी उत्तीर्ण को ही दिया जायेगा। शिविरार्थी की योगयता मैट्रिक उत्तीर्ण होनी चाहिए। शिविर में प्रथम श्रेणी को प्रवेश नहीं मिलेगा।
2. शिवर में सन्धया-यज्ञ एवं प्राथमिक चिकित्सा तथा व्यक्तित्व विकास का क्रियात्मक प्रशिक्षण दिया जायेगा।

मार्गः-

नई दिल्ली, पुरानी दिल्ली से मैट्रो द्वारा सराय उतरें। बस द्वारा बदरपुर, सराय से रेलवे फाटक पार कर गुरुकुल पहुँचे।

निवेदकः-

ऋषिपाल आचार्य	प्रवीण शास्त्री	सतवीर आर्य	मा. रामपाल	विनय आर्य
शिविर संयोजक	प्रधान व्यायाम शिक्षक	महामंत्री, सार्व.आ.वी.द.	प्रधान आ.प्रति.स., हरियाणा	महामंत्री, आ.प्रति.स., दिल्ली
9811687124	94607071733	9414789461	9416874065	9958174441

॥ पत्थर सी हों मांसपेशियाँ, लोहे से भुजदण्ड अभय, नस-नस में हो लहर आग की तभी जवानी पाती जय ॥

स्वामी दयानन्द का स्वरचित जीवन चरित्र

गतांक से आगे.......

और मैं ब्रह्म हूँ अर्थात् जीव ब्रह्म एक है ऐसा निश्चय उन ब्रह्मानन्दादि ने मुझको करा दिया। प्रथम वेदान्त पढ़ते समय भी कुछ-कुछ निश्चय हो गया था परन्तु ठीक दृढ़ हो गया कि मैं ही ब्रह्म हूँ। फिर वही बड़ोदे में एक बनारसी बाई वैरागी का स्थान सुनकर उसमें जाके एक सच्चिदानन्द परमहंस से भेंट करके अनेक प्रकार की शास्त्र विषयक बातें हुईं। फिर वहाँ सुना कि आजकल चाणोद कन्याली में बड़े-बड़े सन्यासी, ब्रह्मचारी और विद्वान ब्राह्मण रहते हैं। वहाँ जाके दीक्षित और चिदाश्रमादि स्वामी ब्रह्मचारी और पण्डितों से अनेक विषयों का परस्पर संभाषण हुआ। फिर एक परमानन्द परमहंस से वेदान्तसार आर्या हरिमीड़े तोटक वेदान्त परिभाषा आदि प्रकरणों का थोड़े महिनों में विचार कर लिया। उस समय ब्रह्मचर्यावस्था में कभी-कभी अपने हाथ से रसोई बनानी पड़ती थी। इस कारण से पढ़ने में विघ्न विचार से चाहा कि अब सन्यास लेना अच्छा है। फिर एक दक्षिणी पण्डित के द्वारा वहाँ जो दीक्षित स्वामी विद्वान थे उनको कहलाया कि आप उस ब्रह्मचारी को सन्यास की दीक्षा दे दीजिये। क्योंकि मैं अपना ब्रह्मचारी का नाम भी बहुत प्रसिद्ध करना नहीं चाहता था। क्योंकि घर का भय बड़ा था जो कि अब तक बना है। तब उन्होंने कहा कि इसकी अवस्था कम है इसलिए हम नहीं देते। इसके अनन्तर दो महीने के पीछे दक्षिण से एक दण्डी स्वामी और एक ब्रह्मचारी जाके चाणोद से कुछ कम कोश भर मकान जो कि जंगल में था उसमें ठहरे उनको सुनकर एक दक्षिणी वेदान्ति पण्डित और मैं दोनों उनके पास जाके शास्त्र विषयक सम्भाषण करने से मालूम हुआ कि अच्छे विद्वान हैं। और वे श्रंगीरी मठ की ओर से आके द्वारिका को जाते थे, उनका नाम पूर्णानन्द सरस्वती था। उनसे उस वेदान्ती के द्वारा कहलाया कि ये ब्रह्मचारी विद्या पढ़ना चाहते हैं। यह मैं ठीक जानता हूँ कि किसी प्रकार का अवगुण इनमें नहीं है। इनको आप सन्यास दे दीजिये। सन्यास लेने का प्रयोजन यही है कि निर्विघ्न विद्या का अभ्यास कर सकें। तब उन्होंने कहा कि किसी गुजराती स्वामी से कहो हम तो महाराष्ट्र के हैं। तब उसने कहा कि दक्षिणी स्वामी गौड़ों को भी सन्यास दे देते हैं तो यह ब्रह्मचारी तो पञ्च द्रविड़ है इसमें क्या चिन्ता है। तब उन्होंने मान लिया और उसी ठिकाने तीसरे दिन सन्यास की दीक्षा दण्ड ग्रहण कराया और दयानन्द सरस्वती नाम रखा। परन्तु मैंने दण्ड का विसर्जन भी उन्हीं स्वामी के सामने कर दिया क्योंकि दण्ड की भी बहुत सी क्रिया है कि जिससे पढ़ने में विघ्न हो सकता था।

आर्योद्देश्यरत्नमाला

गतांक से आगे.....

11. **अपरलोक**- जो परलोक से उलटा है, जिससे दुःख विशेष भोगना होता है, वह अपरलोक कहाता है।

12. **जन्म**- जिसमें किसी शरीर के साथ संयुक्त होके जीव कर्म करने में समर्थ होता है, उसको जन्म कहते हैं।

13. **मरण**- जिस शरीर को प्राप्त होकर जीव क्रिया करता है, उस शरीर और जीव का किसी काल में जो वियोग हो जाना है, उसको मरण कहते हैं।

14. **स्वर्ग**- जो विशेष सुख और सुख की सामग्री को जीव का प्राप्त होना (है, वह) स्वर्ग कहाता है।

15. **नरक**- जो विशेष दुःख की सामग्री को जीव का प्राप्त होना है, उसको नरक कहते हैं।

16. **विद्या**- जिससे ईश्वर से ले के पृथिवीपर्यन्त पदार्थों का सत्य विज्ञान होकर धन से यथायोग्य उपकार लेना होता है, उसका नाम विद्या है।

17. **अविद्या**- जो विद्या से विपरीत है, भ्रम, अन्धकार और अज्ञानरूप है, उसको अविद्या कहते हैं।

18. **सत्पुरुष**- जो सत्यप्रिय, धर्मात्मा, विद्वान, सबके हितकारी और महाशय होते हैं, वे सत्पुरुष कहाते हैं।

19. **सत्संग-कुसंग**- जिसे करके झूठ से छूट के सत्य की ही प्राप्ति होती है, उनको सत्संग और जिसे करके पापों में जीव फँसे, उसको कुसंग कहते हैं।

20. **तीर्थ**- जितने विद्याभ्यास, सुविचार, ईश्वरोपासना, धर्मानुष्ठान, सत्य का संग, ब्रह्मचर्य, जितेन्द्रियतादि उत्तम कर्म हैं, वे सब तीर्थ कहाते हैं, क्योंकि इन्हें करके जीव दुःखसागर से तर जा सकते हैं।
क्रमशः........

दयानन्द मेरे

दयानन्द मेरे, दयानन्द मेरे, है जीवन पर कितने अहसान तेरे।।
घर को त्यागा बचपन में, सुख को भी त्यागा।
सोया देश जगाने को तू, घर से भागा।
वैदिक ज्ञान बाँटकर तूने, हैं बुझते दीप जलाये।।1।।
गुरु से दीक्षा लेकर के, पाखण्ड गढ़ ढाया।
हरिद्वार में जा करके, झण्डा लहराया।
लोगो मेरे पीछे आओ, तुम क्यों हो घबराये।।2।।
वैदिक नाद बजाने को ऋषिवर थे आये।
पाखण्ड का गढ़ ढाने को, ऋषिवर थे आये।
विरोधियों ने कितने तुम पर, थे जख्म ढाये।।3।।
ऋषि ने जाना हम सबको, हमने न जाना।
वैदिक धर्म निभाऊँगा, मन में है ठाना।
ईंट और पत्थर खाकर ऋषि, मन ही मन मुस्काये।।4।।
ऋषिवर अमर कहानी को कैसे मैं गाऊँ।
गागर में सागर है ये, कैसे भर जाऊँ।
'खन्ना' गाये यह गीत, और दुनियाँ को समझाये।।5।।

-**''दिनेश आर्य द्वारा रचित''**

।। ऐसे हों लाल पैदा खेलें जो गोलियों से, भूमि को तृप्त करके श्रद्धा की झोलियों से ।।

बसंतोत्सव बनाम नवशस्येष्टि (होली)

यह भारतवर्ष सदा से ही पर्वप्रिय देश रहा है। यहाँ वर्षभर एक के बाद एक पर्व मनाये जाते हैं। जो भारतीय जनमानस में मिलजुल कर रहने की भावना को उद्दीप्त करते हैं। वस्तुत: ये पर्व उत्साह से अपने कर्त्तव्य में जुटे रहने की प्रेरणा के साथ-साथ लोगों के जीवन स्तर को प्रोन्नत बनाने में अहम् भूमिका निभाते हैं। पाणिनीय व्याकरण के आधार **पृ पालनपूरणयो:** धातु से पर्व शब्द निष्पन्न होता है जिसको अभिप्राय है **जनान् आनन्देन पूरयतीति पर्व** अर्थात् जनमानस में जो प्रसन्नता व हर्ष का संचार कर दे उसका नाम पर्व है। उड़ीसा में कहावत है, **बार मास रे तेरे टी** पर्व अर्थात् विश्व में केवल अपना भारतवर्ष ही ऐसा देश है यद्यपि देश में सर्वत्र उन्हीं नामों एवं रूपों में वे पर्व नहीं मनाये जाते पुनरपि किसी न किसी रूप में अपनी भावनाओं का इजहार तो पर्वों के जरिये करते ही हैं इस अंतिम सत्य को कौन नकार सकता है? देश में मनाये जाने वाले अनगिनत पर्वों में से चार पर्व ऐसे है जो पृथक-पृथक अपना विशिष्ट महत्व रखते हैं श्रावणी उपाकर्म, विजयादशमी, दीपावली और होली।

इस देश में दो प्रकार की फसलें होती हैं-रबी और खरीफ। ये दोनों फसलें क्रमश: जब कट करके आती थीं तो दीपावली एवं होली के पर्व मनाये जाते थे। इन पर्वों को नवशस्येष्टि के रूप में यहाँ मनाते थे। नवशस्येष्टि का अर्थ नये अन्न से यज्ञ होता है। हमारे हिन्दू त्यौहार प्रकृति और मौसम के बदलने के साथ-साथ आते जाते रहते हैं। इस प्रकार होली का पर्व भी बसंत ऋतु के साथ ही आता है। बसंत ऋतु को ऋतुराज अर्थात् ऋतुओं का राजा भी कहा जाता है। ऋतुराज बसंत का आविर्भाव हो चुका है बसंत ऋतु के साथ-साथ प्रकृति की छटा में भी परिवर्तन आ गया है। उसका रूप दिन-प्रतिदिन रम्यतर होता जा रहा है। आज बसन्त भी अपने पूर्ण यौवन पर है। वनोपवन में शहर और गांवों में सर्वत्र नयनाभिराम विकास मन को मोद से भर देता है। चराचर जगत् ने भी इसी आनन्द से प्रफुल्लित होकर नवीन बदल लिया है। उद्यानों में नवविकसित कुसुमों की बहार है और खेतों में परिपक्व यव और गोधूम के शस्यों की सुनहरी सरिता तरंगित हो रही है। पशुओं ने नवीन रोमावली के चित्र-विचित्र अभिनव परिधान धारण किये हैं। पक्षियों की चारू चहचहाट से सुन्दर सरसता का संचार हो गया है। कलकण्ठा कोकिला की कूक मयूर की केका, तरुण तीतर का तारस्वर तथा कपोत का कलरव या कबूतरों की गुटरगूं, वायुमण्डल को मधुरिम समीर अठखेलियां करता हुआ चल रहा है। ऐसे उदार और मनोहर सुसमय में आषाढ़ी शस्य के शुभागमन की शुभाशा जनता और किसानों के मन में मोद, मौज, मस्ती और उल्लास भर देती है। इस मास की फसल भारत की सब फसलों में सर्वश्रेष्ठ और सिरमौर मानी जाती है। ऐसे फसल की अवाई पर कृषकों का मन बल्लियों की तरह उछलने लगता है। ऐसे सुखद अवसर पर आनन्दोत्सव मनाना स्वाभाविक ही है। यह भारतीय होली का उत्सव केवल आमोद-प्रमोद का ही साधन नहीं है धर्मपरायणता का भी है क्योंकि हिन्दुओं की प्रत्येक बात में धार्मिकता और वैज्ञानिकता जुड़ी हुई है। शीतकालीन वर्षा के अनन्तर आवासों की परिष्कृति के लिये तथा बसन्त की नई ऋतु बदलने पर अस्वास्थ्य के प्रतिरोध के लिए हवन से वातावरण को शुद्ध करने का अभिप्राय है। गीता में कहा है-

यज्ञशिष्टानि: सन्तो मुच्यते सर्वकिल्विषै:।
भुञ्जते ते त्वघं पापा ये पचन्त्यात्मकारणात्॥

अर्थात् नई फस से सर्वप्रथम यज्ञ किये बिना ही जो व्यक्ति उस अन्न का सेवन कर बैठते हैं वे केवल पाप ही खाते हैं और इसके विपरीत जो यज्ञ भगवान को हवि प्रदान करने के उपरान्त अन्न का सेवन करते हैं वे सब प्रकार के पापों से छूट जाते हैं। आज भी कुछ प्रान्तों में होली के अवसर पर पहले पके चने आदि अग्नि में चढ़ाते हैं और अर्धपक्व यानी होलक होने पर उसका सेवन करते हैं। प्राचीन यज्ञों का यह अपभ्रंश रूप ही है। आज आवश्यकता है अपनी संस्कृति के अनुरूप पर्वों के पालन करने की।

उपर्युक्त बातों के अतिरिक्त भी आज इन पर्वों में अनेक विकृतियों और फूहड़ता का प्रवेश हो गया है जैसे दीपावली में जुआ खेलना, शराब पीना, त्यौहार की आड़ में कुचेष्टायें करना, अश्लीलता करना, भद्दी गालियां देना आदि। यह सब पर्वों की पवित्रता बचाये रखने के लिए हम सबका नैतिक कर्त्तव्य है। आइये इन प्राचीन पर्वों की गुणवत्ता के अक्षुण्ण बनाये रखने के लिए हम सभी अपनी योग्यता, क्षमता व सामर्थ्य के अनुसार संकल्पबद्ध होकर समृद्ध समाज की संरचना में सहयोगी बनें।

-अनिल आर्य, दुर्ग

आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश के तत्वावधान में आगामी मई माह 2018 में आयोजित आर्यवीर प्रशिषण शिविर की पूर्व तैयारियों हेतु रविवार 6 मई 2018 को प्रात: 10.00 बजे से सायं 6.00 बजे तक शिक्षक एवं शाखानायक कार्यशाला का आयोजन आर्य वीर दल के मुख्य कार्यालय मिन्टो रोड पर किया जायेगा। कृप्या सभी शिक्षक व शाखानायक 6 मई को प्रात: 10.00 बजे कार्यशाला स्थल पहुंचे।

आर्य वीर दल, दिल्ली प्रदेश

आर्य समाज मेरी मातृ संस्था

पं0 गुरुदत्त विद्यार्थी- गुरुदत्त ने योगी दयानन्द को स्वेच्छा से मृत्यु का आलिंगन करते देखा। वह दृश्य उसकी आँखों में ऐसा समा गया कि वह ऋषिवर का दीवाना बन गया। आधुनिक शिक्षा, डार्विन का विकासवाद, हर्बर्ट स्पेन्सर आदि पाश्चात्य विद्वानों के ग्रन्थ पढ़कर जो नास्तिकता के भाव हृदय में जड़ जमाये बैठे थे आज उनका समूलोच्छेदन हो गया। यद्यपि आर्यसमाज की सदस्यता उन्होंने 1880 ई0 में ही ले ली थी, परन्तु प्रखर बुद्धि में उत्पन्न संशय का निवारण करने वाला न होने के कारण उसके विचारों में उथल-पुथल मची हुई थी। परन्तु आज स्वामी जी के मौन उपदेश से गुरुदत्त के हृदयान्धकार का निमेष मात्र दूर हो गया। आज गुरुदत्त नास्तिक नहीं था। उसकी कायाकल्प हो चुका था। जिसे अपनी बुद्धि, विज्ञान की शिक्षा और तर्क शक्ति का गर्व था वह ऋषि मिशन को पूरा करने के भार से दब गया। ऋषि के दाहिक कर्म के पश्चात् लाला जीवनदास और गुरुदत्तन ने भारी मन से लाहौर के लिए प्रस्थान किया।

गुरुदत्त के मन में ऋषि द्वारा जलाई गई ज्योति निरन्तर प्रदीप्त हो रही थी। वे 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' की धुन में इतने दीवाने हो गये कि आर्यसमाज के पाँच नियम अपने चोले के आगे और पाँच पीछे लिखवा लिये। जो व्यक्ति उनके सम्पर्क में आता उसे ही आर्य बनाने के लिए जुट जाते। उनके सत्प्रयासों से चार नवीन वेदान्ती साधु आर्य समाज में दीक्षित होकर वैदिक धर्म के प्रचार में आजीवन जुटे रहे। स्वामी अच्युतानन्द इनमें सब में प्रसिद्ध थे। वे वेदान्त सम्प्रदाय के गुरु और उपनिषदों के उद्भट विद्वान थे। वे सन् 1888 में अपनी साधु मण्डली के साथ लाहौर पधारे। सारे नगर में हलचल मच गई। गुरुदत्त ने उनका उपनिषद भाष्य पढ़ रखा था। उन्होंने विचार किया कि यदि यह विद्वान आर्य समाज में आ जाये जो प्रचारतन्त्र को बहुत सफलता मिलेगी। अपनी योजना को सफल बनाने के लिए वे शिष्य बनकर उनसे उपनिषद पढ़ने लगे। वे प्रतिदिन किराये से घोड़ा गाड़ी लेते और सांय काल स्वामी जी को भ्रमणार्थ ले जाते। रात्रि में देर तक देश, धर्म तथा अन्य विषयों पर चर्चा होती रहती। एक दिन नौकर ने आकर सूचना दी कि बेटा बीमार है। आपको घर बुलाया है। अभी चलिये। परन्तु पण्डित जी वहीं बैठे रहे। नौकर को घर भेज दिया। अन्ततोगत्वा तप, त्याग और बलिदान की विजय हुई। आर्यसमाज के क्षितिज पर अच्युतानन्द का उदय हुआ। गुरु शिष्य बन गया। जिसने स्वामी दयानन्द जी से शास्त्रार्थ में पराजित होकर भी पराजय नहीं मानी, वह आज उनके शिष्य के चरणों का चन्धरीक बन चुका है। पण्डित गुरुदत्त के सान्निध्य में रहकर उसके संशय इस प्रकार मिट गये जैसे सूर्योदय होने पर ओस के बिन्दु अदृश्य हो जाते हैं। कुछ मास तक चारों सन्यासी पण्डित गुरुदत्त के घर पर ही ठहर कर ज्ञानामृत का पान करते रहे। आगे चलकर उन्होंने अष्टाध्यायी और महाभाष्य भी पढ़ाना प्रारम्भ कर दिया।

कार्याधिक्य ने राहू की भाँति पूर्णमासी के उदीयमान चन्द्र को ग्रास बनाना शुरु कर दिया। अभी केवल 26 वर्ष की आयु थी। इस बीच पिता का स्वर्गवास हो गया। माता का एकमात्र आश्रय अब गुरुदत्त ही रह गये। उनकी दिनचर्या पहले से ही अनियमित थी। यदि पढ़ने की धुन लगी तो लगातार तीन-चार दिन पढ़ते ही रहते थे। जब सोने का निश्चय कर लेते तो दो-तीन दिन सोते ही रहते। भ्रमण का विचार आया तो ज्येष्ठ मास की दोपहर में भी मीलों चलते रहते। इसका परिणाम यह हुआ कि खूनी दस्त हो गये। शरीर दुर्बल होता चला गया फिर भी प्रचार कार्य में लगे रहे। लोग उनका भाषण सुनने के दीवाने थे। उनका विचार महर्षि दयानन्द का जीवन चरित्र लिखने का था परन्तु कार्याधिक्य की वजह से सम्भव नहीं हुआ। एक मित्र के इस बारे में पूछने पर उत्तर दिया कि इस जीवन में दयानन्द सा नहीं बन पाया इसलिए शरीर छोड़ रहा हूँ जिससे कि अगले जन्म में उत्तम शरीर मिले और ऋषि दयानन्द का कार्य और तीव्र गति से कर सकूँ। डाक्टरों ने कहा तपैदिक का रोग है मांसाहार करने से ठीक हो सकता है। धर्मवीर ने इस प्रस्ताव को ठुकरा दिया। शरीर की हालत गिरती गई। 19 मार्च सन् 1889 की प्रातः। चैत्र कृष्णा त्रयोदशी मंगलवार का दिन। स्मरण रहे कि महर्षि ने भी मंगलवार को ही देह त्याग किया था। उनके चाचा ने ईश्वर भक्ति के गीत सुनाये। भक्त रैमलदास ने ईशोपनिषद का पाठ शुरु किया। पूरा पाठ शान्ति से सुनकर कुछ समय शयन किया। पाँच बजे उठे और बोले श्वास रुक रहा है नीचे उतारो। शान्ति-शान्ति कहते हुए भूमि पर लेट गये। छः बज गये। परिवार के लोग एवं भक्त जनों के आंसू बह रहे हैं, परन्तु गुरुदत्त के मुख पर शान्ति विराज रही है। सात बजे सूर्य ने जगती को आलोकित किया उधर आर्यसमाज के क्षितिज पर देदीप्यमान इस दिव्य नक्षत्र ने अन्तिम श्वास ली। यद्यपि उन्हें कार्य करने का अवसर बहुत ही कम मिला, परन्तु जितना मिला उसमें आर्य समाज की जड़ें पाताल तक पहुँचा दीं। जिसे उखाड़ने का साहस बड़े से बड़े आँधी-तूफान का भी नहीं हो सका।

-स्वामी देवव्रत सरस्वती

।। उठो दयानन्द के सिपाहियों, समय पुकार रहा है। देशद्रोह का विषधर फन फैला फुंकार रहा है ।।

वेद स्वाध्याय स्वामी देवव्रत सरस्वती

(गतांक से आगे)

"वेद की आज्ञाओं के उल्लंघन का कितना भयंकर परिणाम हो सकता है?"

"भारत की दुर्गति के पीछे वेद की आज्ञाओं का उल्लंघन ही था"

पहली आज्ञा:- अक्षैर्मा दिव्य:॥ (ऋ० 10/34/13) अर्थात् "जुआ मत खेलो।" इस आज्ञा का उल्लंघन हुआ। इस आज्ञा का उल्लंघन धर्मराज कहे जाने वाले युधिष्ठिर ने किया।

परिणाम- एक स्त्री का भरी सभा में अपमान। महाभारत जैसा भयानक युद्ध जिसमें लाखों, करोड़ों योद्धा और हजारों विद्वान् मारे गये। आर्यावर्त्त पतन की ओर अग्रसर हुआ।

दूसरी आज्ञा:- मा नो निद्रा ईशत मोत जल्पि:॥ (ऋ० 8/48/14) अर्थात् "आलस्य, प्रमाद और बकवास हम पर शासन न करें।" लेकिन इस आज्ञा का भी उल्लंघन हुआ। महाभारत के कुछ समय बाद भारत के राजा आलस्य प्रमाद में डूब गये।

परिणाम- विदेशियों के आक्रमण। धर्म के नाम पर अंधविश्वास का पाखण्ड फैल जाना।

तीसरी आज्ञा:- सं गच्छध्वं सं वदध्वम्॥ (ऋ० 10/191/2) अर्थात् "मिलकर चलो और मिलकर बोलो।" वेद की इस आज्ञा का भी उल्लंघन हुआ। जब विदेशियों के आक्रमण हुये तो देश के राजा मिलकर नहीं चले। बल्कि कुछ ने आक्रमणकारियों का ही सहयोग किया।

परिणाम- लाखों लोगों का कत्ल, लाखों स्त्रियों के साथ दुराचार, अपार धन-धान्य की लूटपाट, गुलामी।

चौथी आज्ञा:- कृतं में दक्षिणे हस्ते जयो मे सव्य आहित:॥ (अथर्व० 7/50/8) अर्थात् "मेरे दायें हाथ में कर्म है और बायें हाथ में विजय।" वेद की इस आज्ञा का भी उल्लंघन हुआ। लोगों ने कर्म को छोड़कर ग्रहों फलित ज्योतिष आदि पर आश्रय पाया।

परिणाम- कर्महीनता, भाग्य के भरोसे रहकर आक्रान्ताओं को मुँहतोड़ जवाब न देना, धन-धान्य का अपव्यय, मनोबल की कमी और मानसिक दरिद्रता।

पाँचवीं आज्ञा:- उत्तिष्ठ सं नह्यध्वमुदारा: केतुभि: सह। सर्पा इतरजना रक्षांस्य मित्राननु धावत॥ (अथर्व० 11/10/1) अर्थात् "हे वीर योद्धाओ! आप अपने झण्डे को लेकर उठ खड़े हो और कमर कसकर तैयार हो जाओ। हे सर्प के समान क्रूर रक्षाकारी विशिष्ट पुरुषो! अपने शत्रुओं पर धावा बोल दो।" वेद की इस आज्ञा का भी उल्लंघन हुआ। जब लोगों के बीच बुद्ध और जैन मत के मिथ्या अहिंसावाद का प्रचार हुआ। लोग आक्रमणकारियों को मुँहतोड़ जवाब देने के बजाय मिथ्या अहिंसावाद को मुख्य मानने लगे।

परिणाम- अशोक जैसे महान् योद्धा का युद्ध न लड़ना। विदेशियों द्वारा इसका फायदा उठाकर भारत पर आक्रमण।

छठी आज्ञा:- मिथो विघ्नाना उप यन्तु मृत्युम्॥ (अथर्व० 6/32/3) अर्थात् "परस्पर लड़ने वाले मृत्यु का ग्रास बनते हैं और नष्ट-भ्रष्ट हो जाते हैं।" वेद की इस आज्ञा का भी उल्लंघन हुआ।

परिणाम- भारत के योद्धा आपस में ही लड़-लड़कर मर गये और विदेशियों ने इसका फायदा उठाया।

सातवीं आज्ञा:- न तस्य प्रतिमा अस्ति॥ (यजुर्वेद 32/3) अर्थात् "ईश्वर की कोई प्रतिमा नहीं है।" लेकिन इस आज्ञा का भी उल्लंघन हुआ और लोगों ने ईश्वर को एकदेशी मूर्ति तक समेट दिया।

परिणाम- ईश्वर के सत्यस्वरूप को छोड़कर भिन्न स्वरूप की उपासना और सत्य धर्म को भुला देने। मन्दिर में ढेर सारा धन आदि जमा हो जाना जो न धर्म रक्षा में लगता है और न अभाव व गरीबी दूर करने में।

तो आइये, फिर से वेदों की ओर लौट चलें और एक सशक्त राष्ट्र और चरित्रवान् विश्व का निर्माण करें- **"कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।"**

क्रमश:..- **श्रद्धानन्द सन्यासी**

सूचना

भारत वर्ष में लगने वाले विभिन्न प्रांतीय शिविरों हेतु आर्य वीर दल की गणवेश व अन्य समान जैसे- लाठी, बैज, बेल्ट आदि प्राप्त करने हेतु आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश से संपर्क करें। संपर्क सूत्र:-

9810754638, 9990232164

व्यवहारभानुः

(गतांक से आगे)

प्रश्न- कैसे मनुष्य पढ़ाने और उपदेश करने वाले न होने चाहिए?

उत्तर- मूर्ख के लक्षण- जो किसी विद्या को न पढ़ और किसी विद्वान का उपदेश न सुन कर बड़ा घमण्डी, दरिद्र होकर बड़े-बड़े कामों की इच्छा करनेहारा और बिना परिश्रम के पदार्थों की प्राप्ति में उत्साही होता है, उसी मनुष्य को विद्वान लोग मूर्ख कहते हैं।

दृष्टान्त-एक कोई दरिद्र शेखसेली नामक किसी ग्राम में था वहाँ किसी नगर का बनिया दस रुपये उधार लेकर घी लेने आया था। वह घी लेकर घड़ा में भर मजूर के खोज में था। वहाँ शेखसेली आ निकला। उसने पूछा कि इस घड़े को तीन कोस पर ले जाने की क्या मजूरी लेगा। उसने कहा कि आठ आना। बनिये ने कहा कि चार आना लेना हो तो ले। उसने कहा अच्छा। शेखसेली घड़ा उठा आगे चला और बनिया पीछे-पीछे चलता हुआ मन में मनोरथ करने लगा कि दस रुपये के इस घी के ग्यारह रुपये आयेंगे। इसी प्रकार दस से सौ, सौ से सहस्र, सहस्र, से लक्ष, लक्ष से क्रोड़, फिर क्रोड़ से सब जगह कोठिया करूँगा और सब राजा लोग मेरे कर्जदार हो जायेंगे। इत्यादि बड़े-बड़े मनोरथ करने लगा। और शेखसेली ने विचारा कि चार आने की रूई ले सूत कातकर बेचूँगा, आठ आना मिलेगा। फिर आठ आना से एक रुपया हो जायेगा। फिर वैसे ही एक से दो रुपये होंगे। उनसे एक बकरी लुँगा। जब उसके कच्चे बच्चे होंगे तब उनको बेच गाय लुँगा। उसके कच्चे बच्चे बेच भैंस लुँगा। उसके कच्चे बच्चे बेच घोड़ी लुँगा। उसके कच्चे बच्चे बेच एक हथिनी लुँगा। और उसके कच्चे बच्चे बेच दो बीवियाँ ले आऊँगा। एक का नाम प्यारी और दूसरी का नाम बेप्यारी रखूँगा। जब प्यारी के लड़के गोद में बैठने आवेंगे तब कहूँगा बच्चे आओ बैठो। और जब बेप्यारी के लड़के आकर कहेंगे हम भी बैठें। तब कहूँगा ऊँ हूँ ऊँ हूँ ऊँ हूँ नहीं, नहीं। ऐसा कहकर सिर हिला दिया। घड़ा गिर पड़ा फूट गया और घी भूमि पर फैल के धूर में मिल गया। बनिया रोने लगा और शेखसिली भी रोने लगा। बनिया ने शेखसिली को धमकाया कि घी क्यों गिरा दिया और रोता क्यों है? तेरा क्या नुकसान हुआ?

(शेखसेली) तेरा क्या बिगाड़ हुआ? तू क्यों रोता है?

(बनिया) मैंने दस रुपये प्रथम लेकर घी खरीदा था। उस पर बड़े-बड़े लाभ का विचार किया था। वह मेरा सब बिगड़ गया। मैं क्यों न रोऊँ?

(शेखसेली) तेरी तो दस रुपये आदि की ही हानि हुई। मेरा तो घर ही बना-बनाया बिगड़ गया। मैं क्यों न रोऊँ?

(बनिया) क्या तेरे रोने से मेरा घी आ जायेगा?

(शेखसेली) अच्छा तो तेरे रोन से मेरा घर भी न बन जायेगा। तू बड़ा मूरख है।

(बनिया) तू मूर्ख, तेरा बाप।

दोनों आपस में एक-दूसरे को मारने लगे। फिर मारपीट कर शेखसेली अपने घर की ओर भाग गया। और उस बनिये ने धूर मिले हुए घी का ठीकरे में उठाकर अपने घर की राह ली। ऐसे ही स्वसामर्थ्य के बिना अशक्य मनोरथ किया करना मूर्खों का काम है। और जो बिना परिश्रम के पदार्थों की प्राप्ति में उत्साही होता है उसी मनुष्य को विद्वान लोग मूर्ख कहते हैं।

जो बिना बुलाये जहाँ-तहाँ सभा आदि स्थानों में प्रवेश कर सत्कार और उच्चासन को चाहे वा ऐसे रीति से बैठे कि सब सत्पुरुषों को उसका आचरण अप्रिय विदित हो। बिना पूछे बहुत अण्ड-बण्ड बके और अविश्वासियों में विश्वासी होकर सुखों की हानि कर लेवे वही मनुष्य मूढ़बुद्धि और मनुष्यों में नीच कहाता है। जहाँ ऐसे-ऐसे मूढ़ मनुष्य पठन-पाठनादि व्यवहारों को करनेहारे होते हैं वहाँ सुखों का तो दर्शन कहाँ? किन्तु दुःखों की भरमार तो हुआ ही करती है। इसलिए बुद्धिमान लोग ऐसे-ऐसे मूढ़ों का प्रसंग वा इनके पठन-पाठन क्रिया को व्यर्थ समझकर पूर्वोक्त धार्मिक विद्वानों का प्रसंग और उन्हीं से विद्या का अभ्यास किया करें और सुशील बुद्धिमान विद्यार्थियों ही को पढ़ाया करें। ये विद्वानों और मूर्ख के लक्षण विधायक श्लोक विदुर प्रजागर के अध्याय 32 में एक ही ठिकाने लिखे हैं। क्रमशः..

आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश के तत्वावधान में

आर्यवीर चरित्र निर्माण एवं व्यायाम प्रशिक्षण शिविर 2018

(मई-जून में आयोजित) पूर्ण सूचना आगामी अंक में।

"युवा निर्माण" पत्रिका हेतु सदस्य बनें

"युवा निर्माण" पत्रिका के माध्यम से राष्ट्र निर्माण में योगदान देने हेतु पत्रिका को व्यक्ति-व्यक्ति, घर-घर की आवाज बनाने के लिए इस पत्रिका का वार्षिक सदस्य बनें। वार्षिक शुल्क मात्र 150/- रुपये है।

आवश्यक सूचना

आर्य वीर दल के इतिहास से सम्बन्धित आपके पास कोई लेख/पूर्व स्मृतियाँ हैं जो आर्य वीर दल में आने वाली पीढ़ियों को उसका लाभ पहुँचा सके, वह सब दल के ईमेल- aryaveerdaldelhipradesh@gmail.com या दल के मुख्य कार्यालय पर विषय को टाईप करवाकर भेज सकते हैं। आप वॉइस रिकॉर्डिंग के माध्यम से भी वाट्सऐप पर भेज सकते हैं। वाट्सऐप नं- 9990232164 है।

आर्य वीर दल, दिल्ली प्रदेश का प्रयास है कि पूरे भारत में दल के गणवेश में एकरूपता हो। इस हेतु किसी भी प्रान्त को दल का गणवेश चाहिए तो वह आर्य वीर दल, दिल्ली प्रदेश से सम्पर्क कर सकता है।
सम्पर्क सूत्र- 9810754638

आर्य वीर दल, दिल्ली प्रदेश अपने कार्यों को दल के website : www.aryaveerdal.org व फेसबुक अकाउंट Arya Veer Dal Delhi Pradesh पर अपलोड करता है। आप सभी आर्य वीर दल, दिल्ली प्रदेश के इन दोनों पेजो से जुड़े व उसको लाईक और शेयर करे।

"अनुपम दिनचर्या एवं गीताञ्जलि"

संकलनकर्त्ता- श्री दिनेश आर्य

यह सुन्दर कृति आप आर्य वीर दल, दिल्ली प्रदेश के मुख्य कार्यालय से प्राप्त कर सकते हैं। सम्पर्क सूत्र-

9810754638, 9990232164

दल को आर्थिक सहयोग देने हेतु-

आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश, कॉर्पोरेशन बैंक
खाता सं.-21060010100 5031,
IFSC- CORP0002106
ब्रांच-वसुन्धरा, गाजियाबाद

(संस्था को दी गई दानराशि आयकर की धारा 80जी के अन्तर्गत कर मुक्त है)
आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश, आर्यसमाज मिण्टो रोड, डी.डी.यू.मार्ग, निकट-रणजीत सिंह फ्लाईऑवर, नई दिल्ली-2 से प्रकाशित एवं 10/63 (i) क्रिएटिव प्लैनेट, कीर्ति नगर ओद्यो. क्षेत्र, नई दिल्ली-110015 द्वारा मुद्रित
Email : aryaveerdaldelhipradesh@gmail.com | Web : www.aryaveerdal.org
सम्पादक : जगवीर आर्य 9810264634 सहसम्पादक : बृहस्पति आर्य 9990232164 व्यवस्थापक : जितेन्द्र भाटिया 9811322155
संस्था के समस्त अधिकारी संस्था में अवैतनिक सेवा प्रदान करते हैं

प्रेषित ____________________